आयापेक्षिति मांग की लोच – एक रैखिकीय विवेचन

पुरुषोत्तम माथुर

किसी विशेष वस्तु की मांग को समझने के लिये कई बातोंका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है क्यों कि कई प्रकारकी परिस्थितियां मांग पर अपना अलग अलग प्रभाव डालतीं हैं। उदाहरणतः, वस्तु का विभिन्न सामाजिक व आर्थिक स्तरके व्यक्तियोंकी घरेलू आवश्यकताओं–में स्थान, राष्ट्रकी आमदनी व संपत्ति का उन व्यक्तियोंमें विभाजन, विभिन्न उद्योगधंदे में उसकी कच्चे माल के रूप में खपत, उसके मूल्योंका उतार–चढ़ाव, अन्य वस्तुओं के मूल्य के उतार–चढ़ाव की उसकी मांग पर प्रतिक्रिया – इत्यादि इत्यादि। इन सब परिस्थितियों के मांग पर प्रभाव का एक साथ विश्लेषण करना अत्यन्त दुष्कर है। कौन सी परिस्थिति के किस प्रकारके परिवर्तन मांग पर कैसा प्रभाव डालते हैं इस को समझने के लिये यह जरूरी है कि विभिन्न कारणों के प्रभावों का अध्ययन अलग अलग किया जावे। केवल एक ही कारण के प्रभाव का अध्ययन करते समय यह अभिधारणा तो करनी ही पडेगी कि और सब परिस्थितियां अविचलित रहीं हैं। यद्यपि अनुसंधानित कारण के प्रभाव अविचलित परिस्थितियों की आधारित वस्तुस्थितियों के बदलने के साथ साथ बदलते रह सकते हैं। प्रस्तुत लेख मे मांग पर बदलती हुई आमदनीयों के प्रभाव का विवेचन करा गया हैं।

व्यक्ति की आय–सापेक्ष मांग

किसी व्यक्ति की आमदनी बढ़ने पर उसकी विभिन्न वस्तुओं की मांग में परिवर्तन होन स्वाभाविक हैं। अधिकतर वस्तुओं की मांग की तो बढ़ने की ही सम्भावना हैं। वह खानेपर ज्यादा खर्च करेगा, ज्यादे कपडे बनवायेगा, ज्यादा अच्छा मकान लेने का प्रयत्न करेगा, सिनेमा व अन्य मनोरंजन के साधनों पर अधिक खर्च करेगा इत्यादि इत्यादि। पर यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक वस्तु पर खर्चा बढ़ ही जावे। यह हो सकता है कि बाज़रे की रोटी का खाना कम हो जावे और उसकी जगह गेंहू की रोटी खाई जाने लगे; तेल में खाना बनने के बदले घी में बनने लगे; सूती साड़ियों की जगह रेशमी साड़ियां खरीदी जावें इत्यादि इत्यादि। किसी व्यक्ति के लिये जिन वस्तुओं की मांग उसकी आमदनी बढ़ने पर कम होती है उन वस्तुओं को "घटिया वस्तु" कहा जाता हैं। किसी वस्तु का 'घटिया वस्तु' होने के लिये यह आवश्यक नहीं है कि जिस आवश्यकता की वह पूर्ति करती हो उस आवश्यकता की पूर्ति कोई और उससे अपेक्षाकृत अच्छी वस्तु करने लगे जैसे कि उपरिलिखित उदाहरणों से प्रकट होता है। मानिये, एक व्यक्ति अपनी आय बढ़ने पर अपने को मोटर कार रखने के योग्य समझने लगा, परन्तु उसकी बढ़ी हुई आय में से कार रखनेका पूरा खर्चा नहीं निकलता। इस अवस्था में अगर वह कार रखेगा तो उसे किसी और वस्तु के उपभोग में कटत करनी पड़ेगी। जिस वस्तु के उपभोग में वह कटत करेगा, वह वस्तु उस परिस्थिति में "घटिया वस्तु" हो जावेगी, चाहे उसका यातायात से कोई संबंध हो या न हो।